जे.टी.डी.सी.एल. द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पर्यटन पत्रिका

जोहार झारखण्ड

प्रकृति का छुपा गहना...

अंक प्रथम (जुलाई-सितम्बर, 2018)

श्रावणी मेला 2018

jharkhand tourism
Nature's hidden jewel

EXPLORE JHARKHAND

Return to the lap of nature, to be one with the calmness and peace that surrounds the many deep, luch forests of Jharkhand. You should never miss the opportunity to spend some time enjoying the silence of these jungles and Dams of the State of Jharkhand.

Department of Tourism, Government of Jharkhand

M.D.I. Building, 2nd Floor, Dhurwa, Ranchi 834004, Ph.:0651-2400493, Fax:2400492
Secretary Ph.:0651-2400981, Fax: 0651-2400982, Email: govjharkhandtourism@gmail.com
Director Ph.:0651-2400493, Fax: 2400492, Email: dirjharkhandtourism@gmail.com

Follow us at : website: jharkhandtourism.gov.in | https://www.facebook.com/jharkhandtourismdepartment | https://twitter.com/visitjharkhand

सम्पादकीय

जोहार
झारखण्ड

आपको पत्रिका का पहला अंक सौंपते हुए खुशी हो रही है। झारखण्ड के पर्यटन क्षेत्रों को उभारने का यह छोटा सा प्रयास है। कोशिश है कि इस माध्यम से राज्य के पर्यटन को एक नया आयाम दिया जाए। झारखण्ड राज्य पर्यटन विकास निगम राज्य का पर्यटन एजेंसी होने के नाते पर्यटकों के हित और सुविधा के लिए सदैव तत्पर है। राज्य में पर्यटन को बढ़ावा देने पर सरकार विशेष ध्यान दे रही है। इस दिशा में सतत प्रयास किया जा रहा है। योजनाएँ बनाकर उस पर तेजी से काम हो रहा है। आने वाले कुछ दिनों में विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेला शुरू होने वाला है। पहला अंक श्रावणी मेला पर ही आधारित है। मेले की अवधि में लाखों लोग प्रतिदिन यहाँ आते हैं। इस एक महीने में यहाँ का माहौल ही पूरी तरह अलग होता है। पत्रिका में संथाल परगना के आस–पास के पर्यटन स्थल और रमणिक स्थलों को भी थोड़ी जगह दी गई है। इससे बाबा के दर्शन करने आने वालों को आस–पास के पर्यटन स्थलों की भी जानकारी मिल सकेगी। वे अपनी सुविधा से वहाँ भी जा सकेंगे। झारखण्ड में पर्यटन स्थलों की भरमार है। हर जिले में कोई न कोई मंदिर, स्मारक, जलप्रपात सहित देखने और घुमने लायक जगहें हैं। उसका स्वरूप पूर्णरूप से अब तक उभरकर सामने नहीं आ सका है। हमारा प्रयास है कि पत्रिका के माध्यम से राज्य के पर्यटन के पूरे स्वरूप को एक–एक कर सामने लाया जाए। उम्मीद है कि आपको यह और आने वाला अंक जरूर पसंद आएगा।

प्रधान सम्पादक
– **संजीव कुमार बेसरा, भा.प्र.से.**
प्रबंध निदेशक, जे.टी.डी.सी.एल.

संरक्षक
डॉ मनीष रंजन (भा.प्र.से.)
सचिव, पर्यटन, कला-संस्कृति,
खेलकूद एवं युवा कार्य विभाग, झारखण्ड

प्रधान सम्पादक
संजीव कुमार बेसरा (भा.प्र.से.)
निदेशक पर्यटन एवं एम.डी.
जे.टी.डी.सी.एल.

संपादक
राजीव रंजन
महाप्रबंधक, जे.टी.डी.सी.एल.

सम्पादकीय सलाहकार
अमित गुप्ता

आलोक प्रसाद, डी.जी.एम., झारखण्ड पर्यटन विकास निगम लिमिटेड, रांची द्वारा प्रकाशित

विषय-सूची

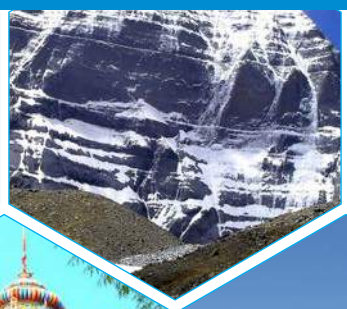

प्रमुख पर्यटन स्थल (भारत/दुनिया) 22-23

समाचार सार 8-9

आवरण कथा 10-14

होटल टैरिफ 24

झारखण्ड के पर्यटन स्थल 16-19

झारखण्ड के व्यंजन 25-26

यात्रा वृतांत 20-21

सोशल मीडिया से 27-28

श्री रघुवर दास
मुख्यमंत्री, झारखण्ड

झारखण्ड सरकार

संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि झारखण्ड पर्यटन विकास निगम लि० द्वारा 'जोहार झारखण्ड' नामक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

पर्यटन की दृष्टि से झारखण्ड काफी समृद्ध राज्य है। प्रकृति की गोद में बसे झारखण्ड पर ईश्वर ने दोनों हाथों से अतुलनीय वैभव लुटाया है। यहाँ के रमणिक पर्यटक स्थलों की जानकारी इस पत्रिका के माध्यम से लोगों को मिल सकेगी।

पर्यटन के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से प्रकाशित 'जोहार झारखण्ड' पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई।

झारखण्ड सरकार

श्री अमर कुमार बाउरी
मंत्री, पर्यटन, कला-संस्कृति,
खेलकूद एवं युवा कार्य विभाग, झारखण्ड

संदेश

झारखण्ड राज्य खनिज सम्पदा के साथ-साथ प्राकृतिक सौंदर्य का भी खजाना है। भगवान बिरसा एवं सिदू-कान्हू की धरती को ईश्वर नें नैसर्गिक वरदान के साथ-साथ सांस्कृतिक विरासत से भी नवाजा है।

वर्त्तमान युग में पर्यटन दुनिया का सबसे तीव्र गति से बढ़ने वाला व्यापार बन गया है। झारखण्ड में भी पर्यटन स्थलों को विकसित कर पर्यटकों को आकर्षित करने का प्रयास पर्यटन विभाग द्वारा किया जा रहा है। देवघर एवं बासुकीनाथ के श्रावणी मेले में पर्यटकीय सुविधाओं में प्रत्येक वर्ष नए सोपान जोड़े जा रहे है। इस वर्ष क्यू कम्पलेक्स के साथ-साथ टेंट सिटि श्रद्धालुओं को नया अनुभव प्रदान करेगी।

राज्य में पर्यटकों को आकर्षित कर रोजगार में वृद्धि के साथ-साथ राजस्व में भी भारी वृद्धि की जा सकती है। आजकल सोशल मिडिया एवं प्रिंट मिडिया का प्रचार-प्रसार में महती योगदान है। झारखण्ड पर्यटन विकास निगम द्वारा पर्यटन से संबंधित 'जोहार झारखण्ड' पत्रिका का प्रकाशन राज्य पर्यटन के विस्तार में मील का पत्थर साबित होगा। पर्यटन विभाग के इस प्रयास हेतु मैं उनका आभार व्यक्त करता हूँ। मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

श्री सुधीर त्रिपाठी
मुख्य सचिव, झारखण्ड

झारखण्ड सरकार

संदेश

मुझे यह जानकार अपार हर्ष हो रहा कि झारखंड पर्यटन विकास निगम द्वारा झारखंड के प्राकृतिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में पर्यटन की अपार संभावना से आमजनो को अवगत कराने के उद्देश्य से "जोहार झारखंड" पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

झारखंड का पर्यटन जनजाति संस्कृति, प्रकृति प्रदत्त भौगोलिक संरचना एवं भाषा का एक बहुरूपदर्शक है। यहां के आकर्षण के केन्द्र, यथा - जगन्नाथ मंदिर, रांची हिल, रजरप्पा मंदिर, ईटखोरी मंदिर, मलूटी एवं बाबा बैद्यनाथ मंदिर सदृश्य धार्मिक केन्द्रों के साथ-साथ बेतला राष्ट्रीय उद्यान, दालमा वन्यजीव अभयारण्य एवं हुंडरू, जोन्हा जैसे जलप्रपात स्थलों पर झारखंड पर्यटन विकास निगम द्वारा पर्यटकीय सुविधाओं के विकास हेतु अनेक योजनाएं क्रियान्वित की जा रही हैं, जो काफी सराहनीय प्रयास है। पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्रावणी मेला में देवघर एवं बासुकीनाथ में टेंट सिटी के निर्माण कर श्रद्धालुओं के विश्राम के लिए किए जा रहे कार्य काफी प्रशंसनीय है।

मैं झारखंड पर्यटन विकास निगम द्वारा "जोहार झारखंड" के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

झारखण्ड सरकार

श्री डी॰ के॰ तिवारी

विकास आयुक्त, झारखण्ड

संदेश

झारखंड राज्य प्रकृतिक एवं धार्मिक पर्यटन के मानचित्र पर तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। पश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात एवं नेपाल से बड़ी संख्या में पर्यटक यहां आते हैं। राज्य के महत्वपूर्ण जलप्रपातों एवं धार्मिक पर्यटन स्थलों को सुरक्षित एवं मनोरंजक बनाने का हरसंभव प्रयास किया जा रहा है। स्थानीय लोगों की सहभागिता से रोजगार में भी वृद्धि हो रही है।

झारखंड पर्यटन विकास निगम द्वारा ''जोहार झारखंड'' का प्रकाशन कर राज्य पर्यटन के विस्तार का सुन्दर प्रयास किया जा रहा है। पत्रिका के प्रथम अंक के प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

डॉ॰ मनीष रंजन
सचिव, पर्यटन, कला-संस्कृति,
खेलकूद एवं युवा कार्य विभाग, झारखण्ड

झारखण्ड सरकार

संदेश

झारखण्ड अपनी नैसर्गिक सुंदरता, पर्यटन और धार्मिक स्थलों के कारण देश में अलग पहचान रखता है। यहां भगवान शिव का धाम देवघर है। जैन धर्मावलंबियों का तीर्थ स्थल पारसनाथ, माँ छिन्न मस्तिका का रजरप्पा में मंदिर है। नेतरहाट में सूर्योदय और सूर्यास्त का अद्भभूत नजारा देखने को मिलता है। देवघर को तो राज्य की सांस्कृतिक राजधानी तक कहा जाता है। संथाल परगना में भी कई मंदिर और पर्यटन स्थल मौजूद हैं। इसके अलावे भी राज्य के विभिन्न जिलों में जलप्रपात एवं कई मंदिर स्थित हैं। सरकार पर्यटक और आगंतुकों को बेहतर से बेहतर सुविधा उपलब्ध कराने की दिशा में सतत प्रयासरत है। हाल ही में राँची और आसपास के पर्यटन स्थलों के लिए बस सेवा शुरू की गई है। सरकार स्थानीय युवकों को भी पर्यटन के माध्यम से रोजगार उपलब्ध करा रही है। उन्हें पर्यटक मित्र बनाया गया है। झारखण्ड में कई डैम और जलप्रपात भी है। इन्हें विकसित करने का काम शुरू कर दिया गया है। जल्द ही यह नए स्वरूप में लोगों के सामने आएगा। झारखण्ड राज्य पर्यटन विकास निगम 'जोहार झारखण्ड' पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है, यह राज्य के पर्यटन स्थलों पर केंद्रित होगा। राज्य के पर्यटन के प्रचार-प्रसार में यह मील का पत्थर साबित होगा।

श्रावणी मेला इस वर्ष 28 जुलाई से शुरू हो रहा है।

मदिरा पर प्रतिबंध

बाबाधाम आने वाले सभी कांवरियों को साफ और स्वच्छ भोजन मुहैया कराने का निर्णय लिया गया है। खाने की गुणवत्ता के साथ–साथ थाली में परोसे जाने वाले सब्जी, दाल, भुजिया, चावल, पनीर आदि सामग्रियों की गुणवत्ता का भी पूरा ख्याल रखने का निर्देश दिया गया है। श्रावण मास के दौरान मदिरा के सेवन पर प्रतिबंध लगाया गया है।

समाचार सार

डॉक्टर प्रतिनियुक्त

श्रावणी मेले में डॉक्टरों की प्रतिनियुक्ति की गई है। सभी जिलों से डॉक्टर को यहां भेजा गया है। उन्हें भक्तों की चिकित्सा और सेवा करनी है।

देवघर जिला प्रशासन ने इस वर्ष मेले में हर तरह के प्लास्टिक के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया है।

बस सेवा शुरू

पर्यटकों की सुविधा के लिए पर्यटन निगम बस का परिचालन कर रहा है। यह रांची के ओवरब्रिज स्थित पर्यटन भवन परिसर से खुलती है। हर मंगलवार को बस रांची से देवड़ी मंदिर के लिए जाती है। वापसी में पर्यटकों को सूर्य मंदिर, दशम फॉल का दर्शन भी कराया जाता है। इसी तरह शनिवार और रविवार को रांची–रजरप्पा मंदिर के लिए बस चलती है। पतरातू होते हुए यह वापस आती है। प्रति पर्यटक 350 रुपये किराया लगता है।

बाजार में मिलेगी बासुकी अगरबत्ती

श्रावणी मेला के दौरान बासुकी अगरबत्ती बाजार में उपलब्ध होगी। राज्यपाल श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने राजभवन दुमका में स्वयं सहायता समूह की महिलाओं की पिंक आर्मी और ब्लू आर्मी से मुलाकात की। राज्यपाल ने पिंक आर्मी द्वारा निर्मित बाली फुटवियर (चप्पल) और बासुकी अगरबत्ती खरीदी। उन्होंने कहा कि मुझे बहुत खुशी है कि जिला प्रशासन द्वारा इस तरह से महिला सशक्तिकरण का काम किया जा रहा है। जब अपने घर की महिलाएं फुटवियर का निर्माण कर रही हैं, तो हमें इसका उपयोग करना चाहिए। बासुकी अगरबत्ती की सुगंध एक दिन पूरे राज्य के साथ–साथ देश भर में फैलेगी। दुमका के उपायुक्त मुकेश कुमार ने बताया कि 300 महिलाएं बासुकीनाथ धाम में अर्पित पुष्प और बेलपत्र से बासुकी अगरबत्ती का निर्माण कर रही है। श्रावणी मेला के दौरान ये अगरबत्ती बाजार में उपलब्ध होगी।

संथाली संस्कृति दिखेगी सिद्धो-कान्हू पार्क में

राजधानी रांची के मोरहाबादी स्थित सिद्धो कान्हू पार्क का सौंदर्यीकरण होगा। उक्त निर्देश मुख्यमंत्री रघुवर दास ने अधिकारियों को दिया। पार्क के औचक निरीक्षण पर श्री दास वहां पहुंचे थे। मुख्यमंत्री ने वन विभाग के प्रधान वन संरक्षक को पार्क में संथाली संस्कृति की झलक देने को कहा। संथाल की संस्कृति से यहां आने वाले लोग परिचित हों, इसके लिए समुचित व्यवस्था करने का निर्देश दिया। इसके तहत पार्क के अंदर स्थापित अमर शहीद सिद्धो–कान्हू की प्रतिमा को आकर्षक ढंग से सजाने, पार्क की चहारदीवारी पर संथाल की कलाकृति का प्रदर्शन, वीर सपूतों का चित्रण, पार्क में वहां के पेड़–पौधे लगाने आदि कार्य करने का कहा। वन विभाग के प्रधान वन संरक्षक संजय कुमार ने बताया कि पार्क को संवारने में सरकार एक करोड़ रुपये खर्च करेगी। साथ ही आने वाले समय में यहां लाइट एंड साउंड शो भी शुरू किया जायेगा।

मदरसा मैदान में होगा चारों धाम का प्रतिरूप

देवघर में मदरसा मैदान में चारों धाम और बारह ज्योतिर्लिंग का प्रतिरूप होगा। यह व्यवस्था पूरे सावन और भादो में रहेगी। इसका दर्शन यहां आगंतुक श्रद्धालुओं के साथ–साथ शहरवासी भी कर सकेंगे। प्रशासन की ओर से प्रतिमूर्ति तैयार करायी गई है। आगंतुक श्रद्धालुओं को चारों धाम और द्वादश ज्योतिर्लिंग के प्रतिरूपों का एक जगह पर दर्शन कराना एक अनोखा कार्य होगा।

देवताओं की नगरी है देवघर

श्रावणी मेला 2018

भारत में 12 ज्योतिर्लिंग हैं। इसमें झारखण्ड के देवघर जिले में स्थित बैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग भी शामिल है। यहां श्रावणी मेला में पूरे देश से लाखों श्रद्धालु आते हैं। इसके लिए वे कठिन यात्रा करते है। करीब 105 किलो मीटर की दूरी पैदल तय करते है। घंटो कतार में खड़े होकर जलार्पण करते है।

प्रस्तुति कुमार राजेश की

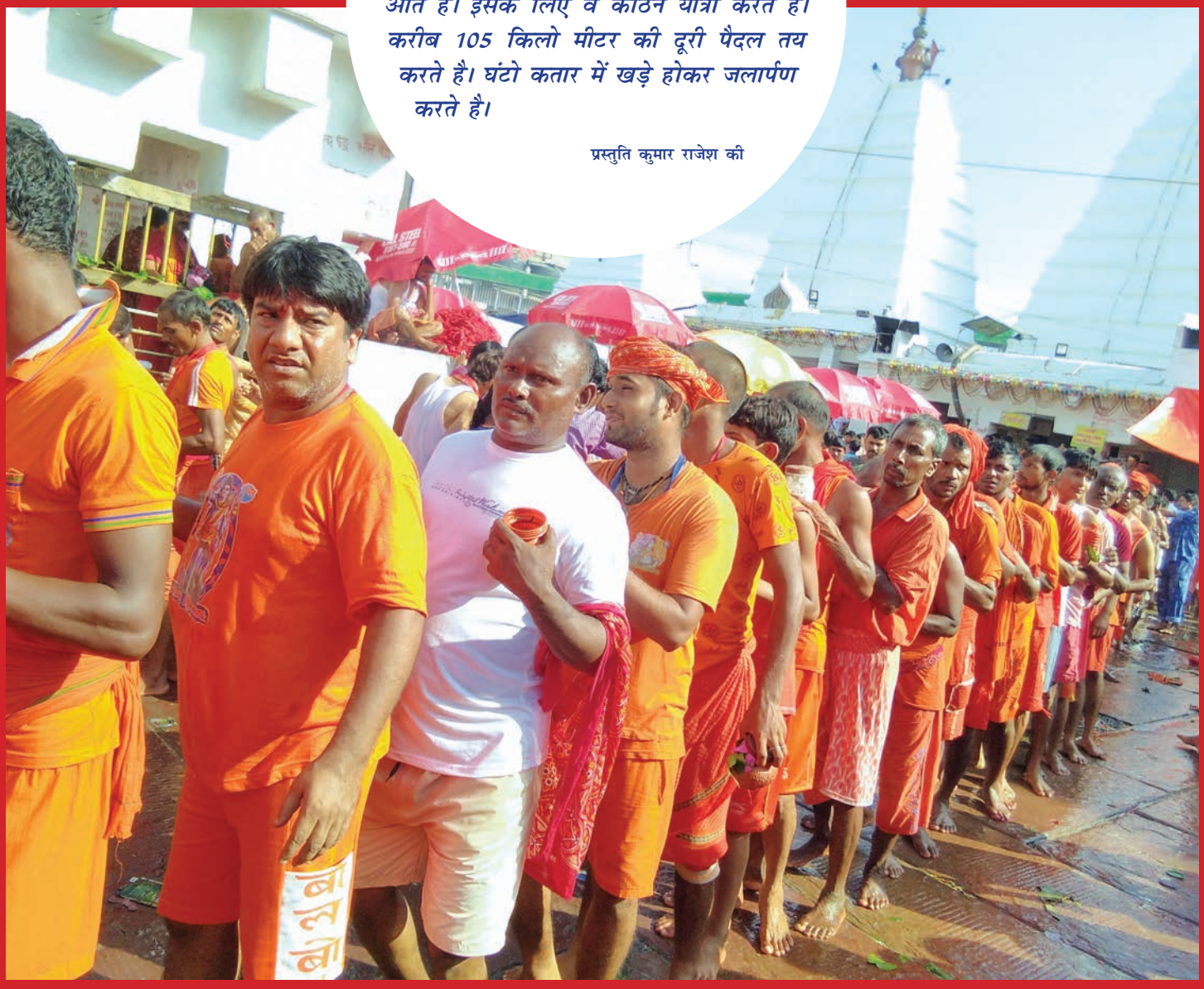

बैद्यनाथ मंदिर द्वादश ज्योतिर्लिंग में एक ज्योतिर्लिंग का पुराणकालीन मंदिर है। यह भारत के झारखण्ड राज्य के देवघर जिले में स्थित है। लोग इसे बाबा धाम के नाम से भी जानते हैं। लोगों के बीच प्रचलित नाम यही है। पवित्र तीर्थ होने के कारण लोग इसे बैद्यनाथ धाम भी कहते हैं। जहां पर यह मंदिर मौजूद है, उस स्थान को देवघर यानी देवताओं का घर कहा जाता है। बैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग स्थित होने के कारण इस जगह को देवघर नाम मिला है। कहा जाता है कि यह ज्योतिर्लिंग एक सिद्धपीठ है। यहां आने वालों की सभी मनोकामनाएं पूरी होती है। इस कारण इस लिंग को 'कामना लिंग' भी कहा जाता है।

इस लिंग की स्थापना की एक पौराणिक कथा प्रचलित है। इसके मुताबिक एक बार रावण ने हिमालय पर जाकर भगवान शिव को खुश करने के लिये घोर तपस्या की। अपने सिर काट-काटकर शिवलिंग पर चढ़ाने शुरू कर दिये। एक-एक करके नौ सिर चढ़ाने के बाद दसवां सिर भी काटने को ही था। तभी शिवजी खुश होकर प्रकट हो गये।

ये है पौराणिक कथा

इस लिंग की स्थापना की एक पौराणिक कथा प्रचलित है। इसके मुताबिक एक बार रावण ने हिमालय पर जाकर भगवान शिव को खुश करने के लिये घोर तपस्या की। अपने सिर काट–काटकर शिवलिंग पर चढ़ाने शुरू कर दिये। एक–एक करके नौ सिर चढ़ाने के बाद दसवां सिर भी काटने को था। तभी शिवजी खुश होकर प्रकट हो गये। उन्होंने उसके सभी सिर ज्यों–के–त्यों जोड़ दिये। उससे वरदान मांगने को कहा। रावण ने लंका में जाकर उस लिंग को स्थापित करने के लिये उसे ले जाने की अनुमति मांगी। भगवान शिव ने अनुमति दे दी। हालांकि चेतावनी दी कि यदि मार्ग में इसे पृथ्वी पर रख देने से वह वहीं अचल हो जाएगा। अंततः यही हुआ। रावण शिवलिंग लेकर चला। रास्ते में एक चिताभूमि आने पर उसे लघुशंका महसूस हुई। फिर रावण उस लिंग को एक

अहीर को थमा कर लघुशंका करने चला गया। उधर उस अहीर को लिंग बहुत अधिक भारी लगा। फिर उसने उसे जमीन पर रख दिया। लघुशंका से लौटने पर रावण पूरी शक्ति लगाकर भी उसे उखाड़ नहीं सका। निराश होकर लिंग पर अपना अंगूठा गाड़कर लंका चला गया। इधर ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओं ने आकर उस शिवलिंग की पूजा की। भगवान शिव के दर्शन होते ही सभी देवी देवताओं ने शिवलिंग को उसी स्थान पर स्थापित कर दिया। शिव–स्तुति करते हुए वापस स्वर्ग में चले गये।

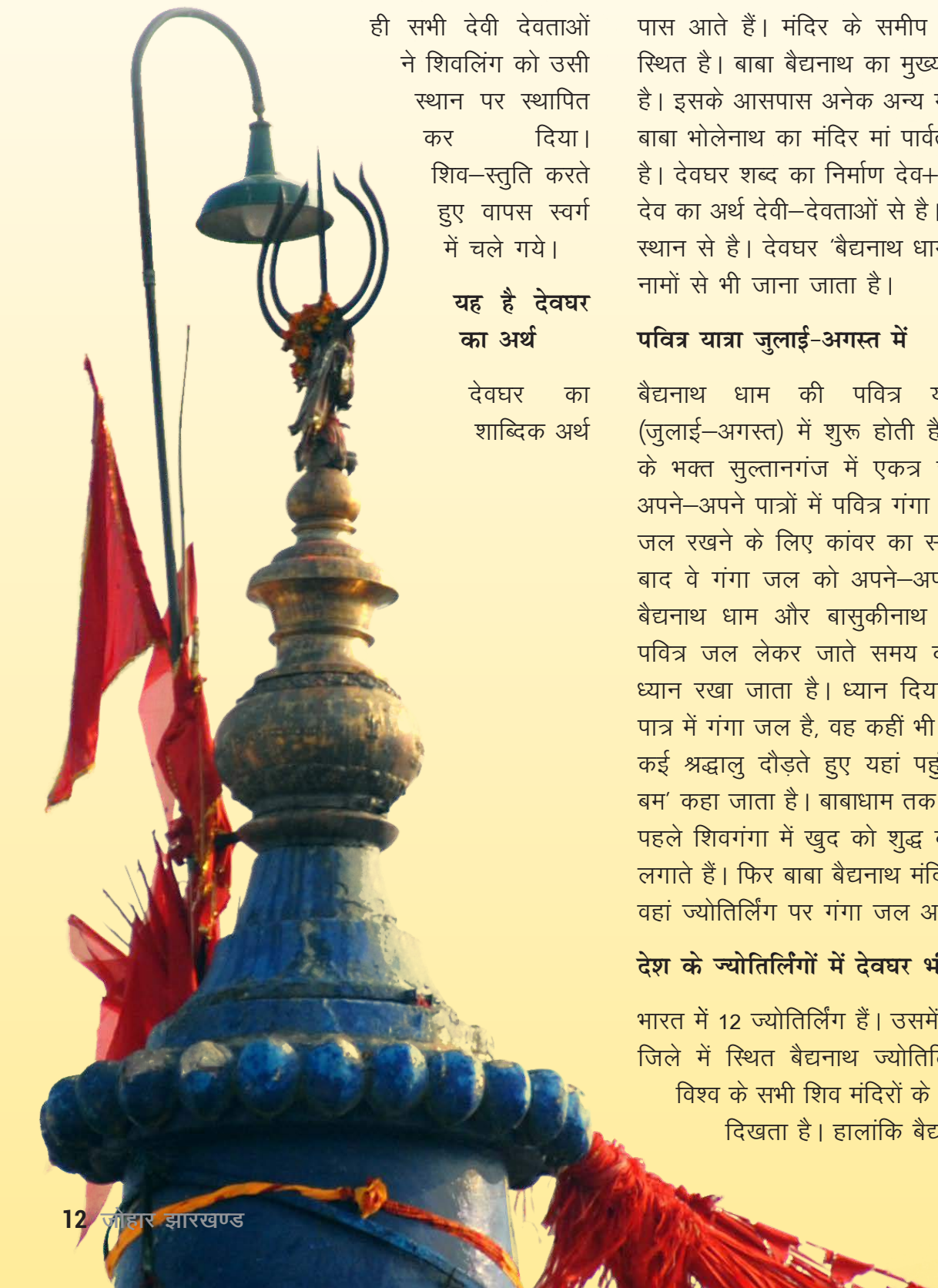

यह है देवघर का अर्थ

देवघर का शाब्दिक अर्थ देवी–देवताओं का निवास स्थान है। देवघर में बाबा भोलेनाथ का अत्यंत पवित्र और भव्य मंदिर बना हुआ है। हर साल सावन के महीने में मेला लगता है। इसमें लाखों श्रद्धालु 'बोल–बम बोल–बम' का जयकारा लगाते हुए बाबा भोलेनाथ के दर्शन करने आते हैं। ये सभी श्रद्धालु सुल्तानगंज से पवित्र गंगा जल लेकर बाबा को चढ़ाते हैं। इस दौरान लगभग 105 किलोमीटर की कठिन पैदल यात्रा कर बाबा के पास आते हैं। मंदिर के समीप एक विशाल सरोवर स्थित है। बाबा बैद्यनाथ का मुख्य मंदिर सबसे पुराना है। इसके आसपास अनेक अन्य मंदिर भी बने हुए हैं। बाबा भोलेनाथ का मंदिर मां पार्वती के मंदिर से जुड़ा है। देवघर शब्द का निर्माण देव+घर से हुआ है। यहां देव का अर्थ देवी–देवताओं से है। घर का अर्थ निवास स्थान से है। देवघर 'बैद्यनाथ धाम', 'बाबा धाम' आदि नामों से भी जाना जाता है।

पवित्र यात्रा जुलाई-अगस्त में

बैद्यनाथ धाम की पवित्र यात्रा श्रावण मास (जुलाई–अगस्त) में शुरू होती है। सबसे पहले भोले के भक्त सुल्तानगंज में एकत्र होते हैं। यहां से वे अपने–अपने पात्रों में पवित्र गंगा जल भरते हैं। पवित्र जल रखने के लिए कांवर का सहारा लेते हैं। इसके बाद वे गंगा जल को अपने–अपने कांवर में रखकर बैद्यनाथ धाम और बासुकीनाथ की ओर बढ़ते हैं। पवित्र जल लेकर जाते समय कुछ खास बातों का ध्यान रखा जाता है। ध्यान दिया जाता है कि जिस पात्र में गंगा जल है, वह कहीं भी जमीन से नहीं सटे। कई श्रद्धालु दौड़ते हुए यहां पहुंचते हैं। उन्हें 'डाक बम' कहा जाता है। बाबाधाम तक पहुंचने पर कांवरिया पहले शिवगंगा में खुद को शुद्ध करने के लिए डुबकी लगाते हैं। फिर बाबा बैद्यनाथ मंदिर में प्रवेश करते हैं। वहां ज्योतिर्लिंग पर गंगा जल अर्पित करते है।

देश के ज्योतिर्लिंगों में देवघर भी

भारत में 12 ज्योतिर्लिंग हैं। उसमें झारखण्ड के देवघर जिले में स्थित बैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग भी शामिल है। विश्व के सभी शिव मंदिरों के शीर्ष पर त्रिशूल लगा दिखता है। हालांकि बैद्यनाथ धाम परिसर के

शिव, पार्वती, लक्ष्मी–नारायण और अन्य सभी मंदिरों के शीर्ष पर पंचशूल लगे हैं। कहा जाता है कि रावण पंचशूल से ही अपने राज्य लंका की सुरक्षा करता था। रावण बैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग को लंका ले जाने के लिए कैलाश से लेकर आया था। हालांकि उसकी यह इच्छा पूरी नहीं हुई। विधाता को कुछ और ही मंजूर था। ज्योतिर्लिंग ले जाने में यह शर्त था कि इसे बीच में कहीं नहीं रखना है, देव योग से रावण को लघुशंका

एक नजर में

प्रचलित नाम	: बाबाधाम
जिला	: देवघर
राज्य	: झारखण्ड
देश	: भारत
मंदिरों की संख्या	: 22
महत्वपूर्ण उत्सव	: महाशिवरात्रि
निर्माता	: राजा पूरनमल
संचालक	: बाबा बैद्यनाथ मंदिर प्रबंध परिषद

का तीव्र वेग असहनशील हो गया। उसने ज्योतिर्लिंग को भगवान के बदले हुए अहीर के रूप को दे दिया एवं लघुशंका करने लगा। उस अहीर ने ज्योतिर्लिंग को जमीन पर रख दिया। इस तरह अहीर के नाम बैद्यनाथ पर बैद्यनाथ धाम का निर्माण हुआ।

Folk Dances

Jharkhand is home to as many as 30 tribes including Particularly Vulnerable Tribal Groups (PVTG) earlier called Primitive Tribes with each one with its distinct way of life, practices and traditions. This makes the state a rich cultural heritagehub. It is culturally vibrant as reflected in the diversity of languages spoken, festivals celebrated and the presence of a variety of folk music, dances, paintings, crafts and other tranditions of performing arts.

The dances of Jharkhand form a very significant part of the cultural lineage and milieu. There are more than 70 dance forms in the State, each one with distinct style, attire and performance including martial dance forms. Santhal, Jhumar, Paika, Chhau, Bheja, Sarhul etc are some of prominent ethnic dance genres performed during all the important festivals and occasions such as welcoming the guests, change of seasons etc.

GOVERNMENT OF JHARKHAND
DEPARTMENT OF TOURISM
F.F.P. Building, 2nd Floor, Dhurwa, Ranchi-834004
Secretary Ph.:0651-2400981, Fax : 0651-2400982

Email : govjharkhandtourism@gmail.com
Director Ph.:0651-2400493, Fax : 2400492
Email : dirjharkhandtourism@gmail.com
JTDC Email ID : jtdcltd@gmail.com

www.jharkhandtourism.gov.in
YouTube : https://m.youtube.com/channel/UCKDHUzseKwkESQLzOLIVODA

jharkhandtourismdepartment visitjharkhand

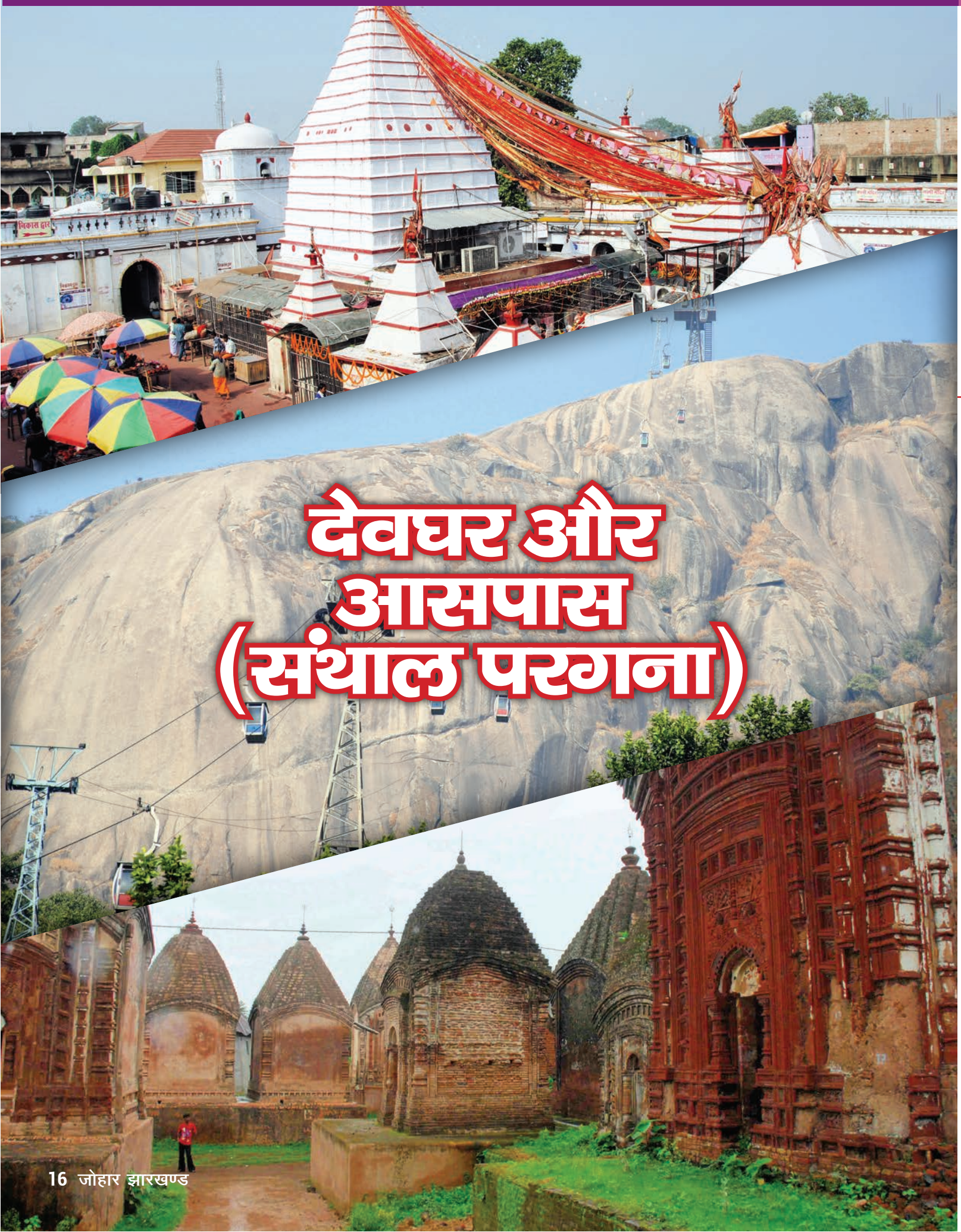

देवघर और आसपास (संथाल परगना)

1 मलूटी (मंदिरों का गांव)

झारखण्ड का संथाल परगना क्षेत्र अपनी नैसर्गिक सुन्दरता और धार्मिक स्थलों के कारण एक अलग महत्व रखता है। यहां मंदिरों के साथ कई अन्य पर्यटन स्थल भी है। लगातार पर्यटक आते रहते है।

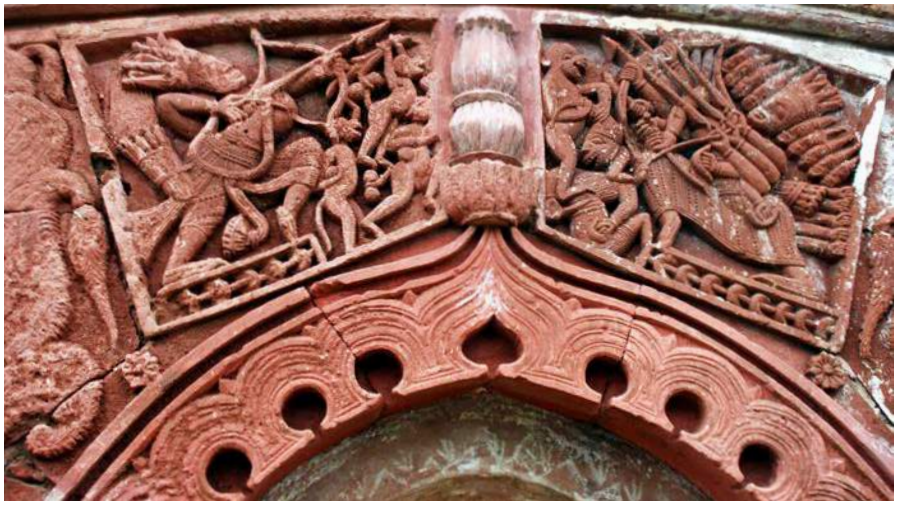

मलूटी एक ऐतिहासिक और धार्मिक स्थान है। यह दुमका जिला मुख्यालय से 55 किमी की दूरी पर दुमका रामपुरहाट इंटर–स्टेट राजमार्ग के समीप शिकारीपारा ब्लॉक में स्थित है। वर्ष 1860 में मलूटी को तत्कालीन राजा बसंत राय उर्फ बसंत द्वारा कर मुक्त पूंजी बना दिया गया था।

यह मलूटी प्राकृतिक सौंदर्य के लिए पुरातात्विक और धार्मिक जगह से जुड़ा है। निकटतम हवाई अड्डा नेताजी सुभाष चंद्र बोस एयरपोर्ट, कोलकाता है। यहां से इसकी दूरी 250 किलोमीटर हैं। यह दुमका रेलवे स्टेशन से लगभग 55 किमी और रामपुरहाट रेलवे स्टेशन से करीब 20 किलोमीटर की दूरी पर है।

2 मसानजोर डैम

मसानजोर दुमका जिले में स्थित एक प्रसिद्ध पिकनिक एवं पर्यटक स्थल है। यह दुमका मुख्यालय से लगभग 31 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। मुख्यतः यह जगह जल–विद्युत बिजली पैदा करने की है। हालांकि समय बीतने के साथ–साथ यह जगह पर्यटकों के लिए एक लोकप्रिय केन्द्र बन गया है। यह स्थल चारों ओर पहाड़ियों एवं जंगलों से घिरा है। नीचे की पहाड़ी पर सुंदर उद्यान और नदी के किनारे दो खूबसूरत डाक बंगले स्थित है। यह स्थल झारखण्ड के साथ–साथ सड़क मार्ग से पश्चिम बंगाल के भी प्रमुख स्थल तारापीठ और रामपुरहाट से जुड़ा है। यह दुमका रेलवे स्टेशन से लगभग 30 किलो मीटर और सीउरी रेलवे स्टेशन से लगभग 35 किलोमीटर की दूरी पर है। तारापीठ (रामपुरहाट) से 70 किलोमीटर की दूरी पर है। सड़क मार्ग से झारखण्ड और पचिम बंगाल से जुड़ा हुआ है।

3 बासुकीनाथ

झारखण्ड के दुमका जिले में स्थित है बासुकीनाथ। यह देवघर–दुमका राज्य मार्ग पर जरमुंडी ब्लॉक में है। दुमका के उत्तर–पश्चिम में बसा है। यह हिंदुओं के लिए तीर्थयात्रा का एक स्थान है। बासुकीनाथ मंदिर यहां मुख्य आकर्षण है।

जसीडीह रेलवे जंक्शन और जामताड़ा रेलवे स्टेशन इसका निकटतम रेल गंतव्य है। यह दुमका से 25 किमी दूर और जसीडीह रेलवे स्टेशन से 50 किलोमीटर दूर है। यह जिला मुख्यालय दुमका से 24 किलोमीटर की दूरी पर है। बिरसा मुंडा हवाई अड्डा, रांची निकटतम हवाई अड्डा है। दूरी 350 किलोमीटर है।

कोलकाता के नेताजी सुभाष चंद्र बोस एयरपोर्ट से यहां की दूरी लगभग 300 किलोमीटर है। देश के विभिन्न हिस्सों से लाखों लोग भगवान शिव की पूजा करने के लिए यहां आते हैं। यह संख्या दिनों–दिन बढ़ती जा रही है। श्रावण (सावन) में कई देश के लोग यहां भगवान शिव की पूजा करने के लिए आते हैं।

4 त्रिकुट पहाड़

त्रिकुट पहाड़ देवघर के सबसे रोमांचक पर्यटन स्थलों में एक है। यहां ट्रेकिंग, रोपेवे, वन्यजीवन एडवेंचर्स और प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लिया जा सकता है। यह लोकप्रिय पिकनिक स्थल और तीर्थयात्रा के लिए एक जगह भी है। चढ़ाई पर घने जंगल में प्रसिद्ध त्रिकुटाचल महादेव मंदिर और ऋषि दयानंद का आश्रम है। ट्रायकिट हिल्स में तीन चोटियां होती हैं। सर्वोच्च चोटी समुद्र तल से 2,470 फीट की ऊंचाई तक जाती है। जमीन से लगभग 1,500 फीट जमीन पर ट्रेकिंग के लिए आदर्श स्थान बनाती है। तीनों चोटियों में से केवल दो को ट्रेकिंग के लिए सुरक्षित माना जाता है। रोपेवे पर्यटकों को केवल मुख्य चोटी के शीर्ष पर ले जाता है। देवघर का एक रोमांचक 360 डिग्री दृश्य ट्रायक हिल्स के शीर्ष से उपलब्ध है। देवघर बस स्टैंड से त्रिकुट पहाड़ की दूरी करीब 21 किलोमीटर है।

5 हिजला मेला

हिजला मेला सवा सौ साल से लग रहा है। तत्कालीन अंग्रेज जिलाधिकारी जॉन राबटर्स कास्टेयर्स के समय 3 फरवरी 1890 को मेला की शुरुआत की गई थी। माना जाता है कि स्थानीय परंपरा, रीति–रिवाज और सामाजिक नियमन को समझने एवं स्थानीय लोगों से सीधा संवाद स्थापित करने के उद्देश्य से मेले की शुरुआत हुई थी। इसी संदर्भ में 'हिजला' शब्द की उत्पत्ति भी 'हिज लॉज' से मानी जाती है। मान्यता यह भी है कि स्थानीय गांव हिजला के आधार पर हिजला मेला का नामकरण किया गया है। वर्ष 1975 में संताल परगना के तत्कालीन आयुक्त जीआर पटवर्धन की पहल पर हिजला मेला के आगे जनजातीय शब्द जोड़ दिया गया। झारखण्ड सरकार ने इस मेला को वर्ष 2008 से एक महोत्सव के रूप में मनाने का निर्णय लिया। वर्ष 2015 में इस मेला को राजकीय मेला का दर्जा प्रदान किया गया। इसके बाद यह मेला राजकीय जनजातीय हिजला मेला महोत्सव के नाम से जाना जाता है।

सामान्यतः यह मेला माघ–फाल्गुन के शुक्ल पक्ष में लगाया जाता है। इस समय तक ग्रामीण कृषि कार्यों से निवृत होकर उल्लास–उत्सव की मनोदशा में रहते हैं। यह मेला न केवल जनजातीय समुदायों बल्कि स्थानीय गैर–जनजातीय समुदायों की सांझी विरासत का अदभुत समन्वय का दर्शन कराता है। त्रिकुट पर्वत से निकलने वाली मयुराक्षी नदी और पर्वत पठारों के मध्य हिजला

मेला की स्थिति इसे अनूठा सौंदर्य प्रदान करता है। नदी की कल–कल धारा, पक्षियों की कलरव, चहचहाहट के मध्य मांदर, ढोल, ढ़ाक, झांझ, झांझर की धुन पर थिरकते मानववृंद अनायास ही सभी को झूमने के लिए मजबूर कर देते हैं।

हिजला मेला विविधता से भरपूर है। यहां एक ओर जनजातीय संस्कृति, नृत्य–संगीत का प्रदर्शन होता है, दूसरी ओर भीतरी कला मंच पर दिन भर बच्चों का क्विज, भाषण, वाद–विवाद प्रतियोगिता और बुद्धिजीवियों के मध्य परिचर्चा का आयोजन किया जाता है।

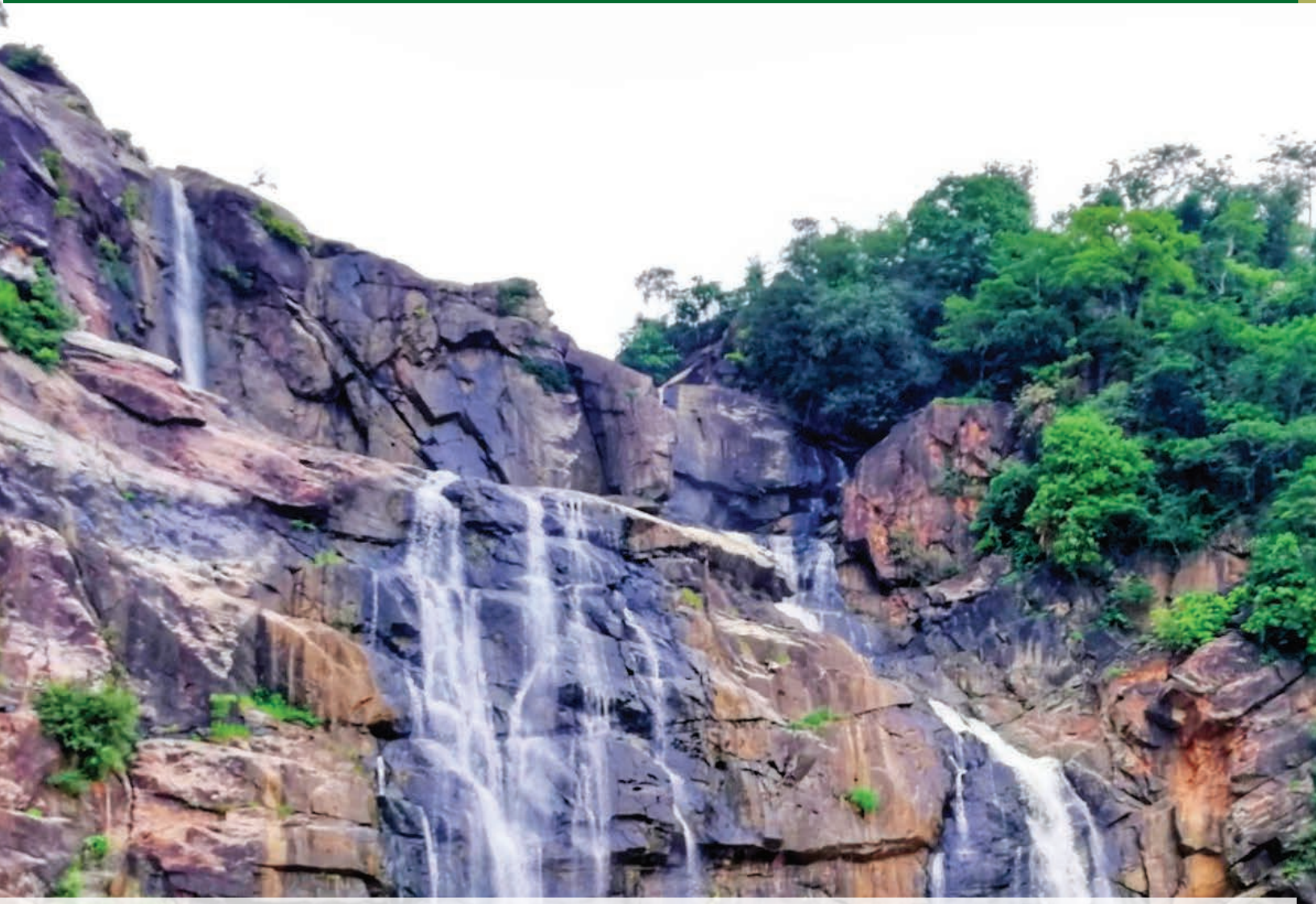

हुंडरू जलप्रपात : रांची के करीब ही प्रकृति का एक खूबसूरत गुलदस्ता

मैं घूमती ही रहती हूं। कभी इस राज्य तो कभी उस। एक दिन दिल्ली में अपने ठीहे पर बैठी थी तो एक दोस्त ने पूछा, अब अगला पड़ाव कहां पर। मैंने जवाब दिया, झारखण्ड। दोस्त ने उपेक्षित सी मुस्कान के साथ कहा, झारखण्ड में क्या है घूमने को। मैंने कहा, तभी तो जा रही हूं। मुझे यकीन था कि झारखण्ड मुझे चौंकाएगा। हालांकि मुझे भी झारखण्ड को लेकर कोई बड़ी आशा नहीं थी। यहां दिल्ली में बैठे–बैठे झारखण्ड के बारे में खबरें पढ़ते हुए बस इतना लगता था कि थोड़ा अस्त–व्यस्त होगा सब वहां। जंगल होगें बड़े खूबसूरत, लेकिन वो सब काफी अंदर के इलाकों में होते होंगे। गरीबी और अव्यवस्था होगी, जैसी कि किसी भी कम विकसित राज्य में होती है। अपने वही पुराने दो छोटे बैग लेकर मैं रांची पहुंच गई एक रात। रांची रेलवे स्टेशन पर एक दोस्त लेने आया था। आमतौर

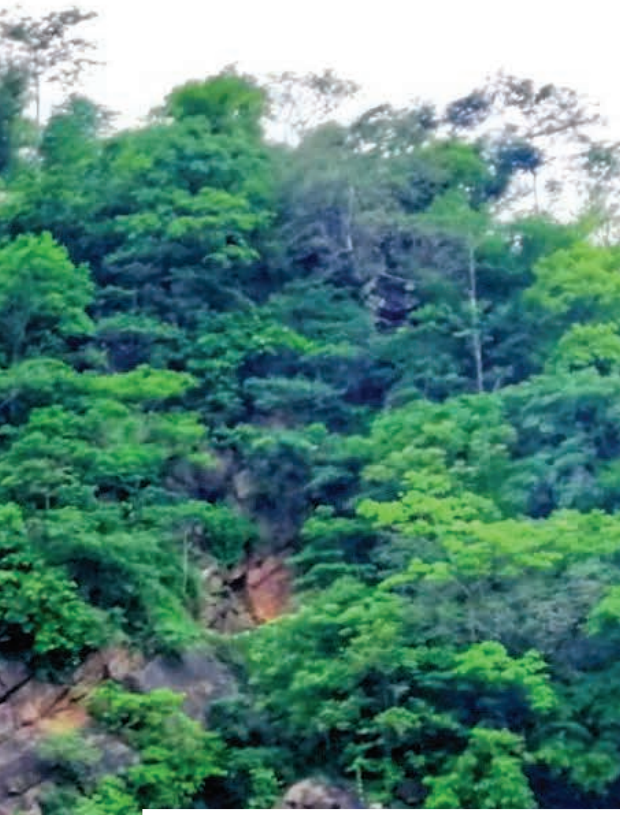

पर मैं अकेले ही ठौर–ठिकाना ढूंढना पसंद करती हूं, लेकिन दिल्ली में बैठकर पढ़ी गई खबरों के मद्देनजर एक फीसद वाला डर था मन में। जब हम स्टेशन के बाहर निकले तब यही कोई साढ़े नौ बज रहा होगा। रात के केवल साढ़े नौ बजे ही रांची की सड़कों से यातायात गायब था। दोस्त ने बताया कि ये इस शहर की खूबी भी है, खामी भी। यहां सब बड़ी जल्दी सो जाते हैं। वो मुझे रास्ते में आ रही दूकानों, खास जगहों के बारे में बताता जा रहा था। मैं चुपचाप सुन रही थी। अचानक से मैं बोली, यार रांची तो काफी साफ–सुथरी है, आय मीन पटना की तुलना में तो बहुत ही ज्यादा। पसंद आ रही मुझे रांची। मेरे दिमाग में तो अलग ही तस्वीर थी।

मेरा अगला दिन हुंडरू फॉल के नाम पर रहा। ये तो रांची का सबसे ऊंचा और देश का 34वां सबसे ऊंचा जलप्रपात है। यहां से झारखण्ड की लाइफलाइन स्वर्णरेखा नदी की एक धारा तेज बहाव के साथ नीचे गिरती है। पूरी 745 सीढ़ियां नापकर आप असली जगह पर पहुंचते हैं। इतनी सीढ़ियां थकान तो बढ़ा रही थीं लेकिन रास्ते में मिल रहे जामुन, भूजा, चाय–कॉफी–पानी से ज्यादा दिक्कत नहीं हो रही थी। हुंडरू फॉल रांची शहर से 45 किलोमीटर की दूरी पर है। यहां पर तो एक फोटो पॉइंट बनाया गया है। जहां पर खींचकर तुरंत प्रिंट दे देते हैं तस्वीर की। सेल्फी के इस जमाने में लोग अब भी इस परंपरागत तरीके से फोटो खिंचा रहे थे। यहां अच्छी–खासी भीड़ थी। पत्थरों पर चेतावनियां लिखी थीं कि इस जगह से आगे मत जाइए। फिर भी कुछ दुस्साहसी पर्यटक आगे बढ़कर नहा रहे थे। ऐसे लोगों पर सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए। कुछ युवा वहां पर लोकगीत गा–बजा रहे थे। प्रपात की तेज कल–कल आवाज और चारों तरफ फैली एकदम धुली सी हरियाली नीरस से नीरस इंसान का दिल प्रफुल्लित कर दे। मैं राजधानी रांची से इतना पास ही इतनी सारी खूबसूरती देखकर चकित भी थी और खुश भी। मैं खुश थी कि झारखण्ड के बारे में बनाई गई मेरी गलत धारणाएं एक–एक करके टूट रही हैं। यहां से निकलकर दशम जलप्रपात गई। वो भी बहुत खूबसूरत है। हजारों सीढ़ियां चढ़–उतरकर अब कहीं और जाने की हिम्मत न बची थी। और अब शाम हो चली थी। जंगलों में बसी इन जगहों पर जाने की अनुमति अब नहीं थी।

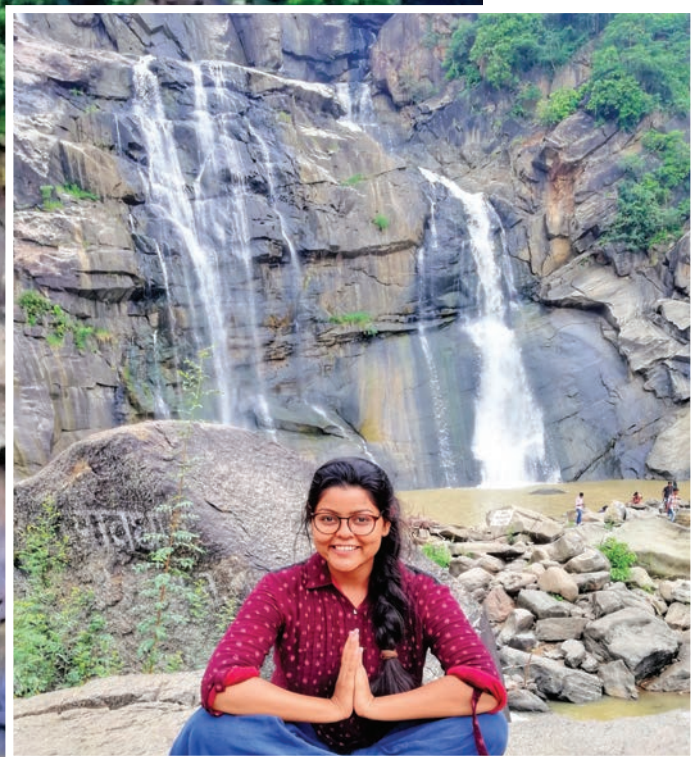

झारखण्ड में घूमे एवं ढूंढी गई और खूबसूरत जगहों के बारे में बातें अगले लेख में...

परिचय :

मेरा नाम प्रज्ञा श्रीवास्तव है। मैं www-chalatmusaafir-in की फाउंडिंग एडिटर हूं। हमारी वेबसाइट देश की पहली हिंदी ट्रैवेल वेबसाइट है। चलत मुसाफ़िर का एक ही उद्देश्य है, देश भर के घुमक्कड़ एक हों। भारत के बारे में हिंदी में लिखें, ताकि हिंदी में यात्रा साहित्य समृद्ध हो। वेबसाइट के अलावा चलत मुसाफ़िर का अपना यूटडूब चौनल भी है, जिसमें अलग-अलग राज्यों की अलहदा कहानियां हैं। ट्रैवेल ब्लॉग्स है। नवंबर, 2017 में चलत मुसाफ़िर को लॉन्च करने से पहले मैं इंडिया टुडे और नेटवर्क 18 ग्रुप्स में बतौर पत्रकार काम कर चुकी हूं। झारखण्ड मेरा बीसवां राज्य है घुमक्कड़ी के सिलसिले में।

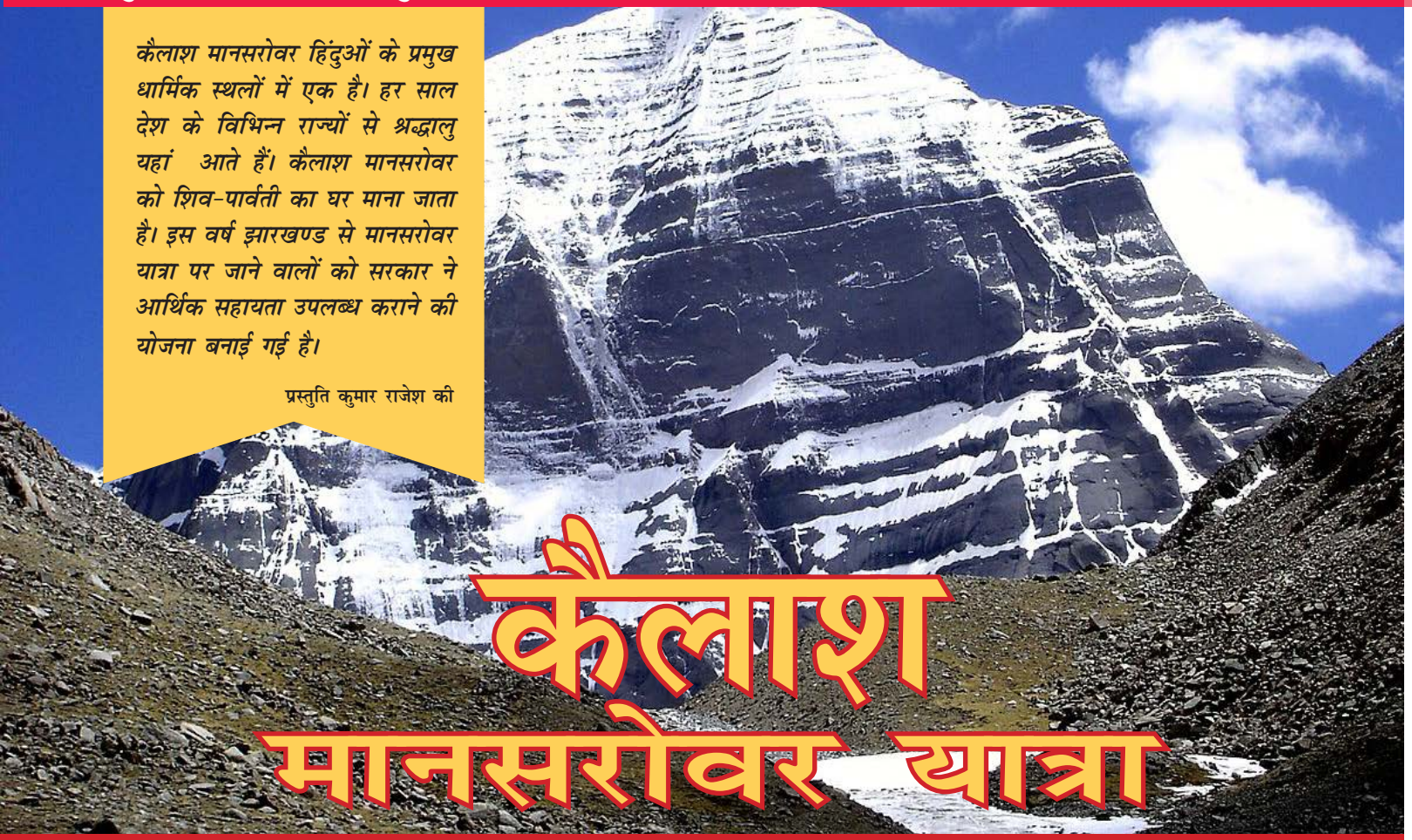

कैलाश मानसरोवर यात्रा

कैलाश मानसरोवर हिंदुओं के प्रमुख धार्मिक स्थलों में एक है। हर साल देश के विभिन्न राज्यों से श्रद्धालु यहां आते हैं। कैलाश मानसरोवर को शिव-पार्वती का घर माना जाता है। इस वर्ष झारखण्ड से मानसरोवर यात्रा पर जाने वालों को सरकार ने आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने की योजना बनाई गई है।

प्रस्तुति कुमार राजेश की

कैलाश मानसरोवर, हिंदुओं के प्रमुख धार्मिक स्थलों में एक। हर साल देश के विभिन्न राज्यों से श्रद्धालु यहां आते हैं। कैलाश मानसरोवर को शिव–पार्वती का घर माना जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार मानसरोवर के पास स्थित कैलाश पर्वत पर शिव–शंभू का धाम है। पुराणों के अनुसार यहां शिवजी का स्थायी निवास होने के कारण इसे 12 ज्येतिर्लिंगों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। कैलाश बर्फ से आच्छादित ऊंचे शिखर और उससे लगे मानसरोवर को 'कैलाश मानसरोवर तीर्थ' कहते हैं। कैलाश पर्वतमाला कश्मीर से लेकर भूटान तक फैली है। मान्यता है कि यह पर्वत स्वयंभू है। कैलाश पर्वत के दक्षिण भाग को नीलम, पूर्व भाग को क्रिस्टल, पश्चिम को रूबी और उत्तर को स्वर्ण रूप में माना जाता है। कैलाश पर्वत समुद्र तल से 22,028 फीट ऊंचा एक पत्थर का पिरामिड जैसा है, जिसके शिखर की आकृति विराट शिवलिंग की तरह है। कैलाश पर्वत की चार दिशाओं से एशिया की चार नदियों का उद्गम हुआ है। बह्मपुत्र, सिंधु, सतलज और करनाली। हिंदू के अलावा, बौद्ध और जैन धर्म में भी कैलाश मानसरोवर को पवित्र तीर्थ स्थान के रूप में देखा जाता है। हिंदू धर्म की मान्यताओं के अनुसार, जो व्यक्ति मानसरोवर झील की धरती को छू लेता है, वह ब्रह्मा के बनाये स्वर्ग में पहुंच जाता है। जो व्यक्ति झील का पानी पी लेता है, उसे भगवान शिव के बनाये स्वर्ग में जाने का अधिकार मिल जाता है।

विदेश मंत्रालय प्रत्येक वर्ष जून से सितंबर के दौरान दो अलग–अलग मार्गों–लिपुलेख दर्रा (उत्तराखंड) और नाथुला दर्रा (सिक्किम) से कैलाश यात्रा का आयोजन करता है। कैलाश मानसरोवर की यात्रा अपने धार्मिक मूल्यों और सांस्कृतिक महत्व के कारण जानी जाती है। हर साल सैकड़ों यात्री इस तीर्थ यात्रा पर जाते हैं। भगवान शिव के निवास के रूप में हिंदुओं के लिए महत्वपूर्ण तीर्थ होने के साथ–साथ यह जैन और बौद्ध धर्म के लोगों के लिए भी धार्मिक महत्व रखता है। यह यात्रा केवल उन भारतीय नागरिकों के लिए खुली है, जो वैध भारतीय पासपोर्टधारक हों। धार्मिक प्रयोजन से कैलाश मानसरोवर जाना चाहते हैं। विदेश मंत्रालय यात्रियों को किसी भी प्रकार की आर्थिक वित्तीय सहायता प्रदान नहीं करता।

कोई भी भारतीय नागरिक जिसके पास वैध भारतीय पासपोर्ट है, वे यात्रा के लिए आवेदन करने का पात्र है। आवेदकों की उम्र 01 जनवरी को न्यूनतम 18 वर्ष और अधिकतम 70 साल होनी चाहिए। वैसे लोग जो विदेशी नागिरकता धारक हैं, वे इस यात्रा के पात्र नहीं है। इसलिए पीआईओ/ओआईसी कार्ट धारक पात्र नहीं हैं। कैलाश मानसरोवर यात्रा को किसी भी निजी संस्था द्वारा लिपुलेख दर्रा (उत्तराखंड) और नाथुला (सिक्किम) से आयोजित नहीं किया जाता है। इन मार्गों पर यात्री सुंदर और सम्मोहित करने वाले सौन्दर्य के साथ कई पर्यटन और धार्मिक स्थलों, पर्वत चोटियों के शानदार दृश्य, उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र और सिक्किम के अद्वितीय वनस्पतियों के शानदार अनुभव का आनंद लेते हुए यात्रा करते हैं। यह यात्रा यात्रियों को पर्याप्त समय देता है कि वे रास्ते में आने वाली विपरीत परिस्तिथियों के अनुकूल अपने आपको को धीरे–धीरे ढाल लें, क्योंकि ऊंचाईयों पर तेजी से आगे बढ़ने से उच्च ऊंचाई पर होने वाली गंभीर बीमारी हो सकती है। यह जानलेवा भी साबित हो सकती है। इसके अलावा यात्रियों को विभिन औपचारिकताओं को पूरा करने के लिए नई दिल्ली में तीन–चार दिन बिताने की जरूरत पड़ती है। चयनित मार्ग के अनुसार यात्रा लगभग 23–25 दिनों में सम्पन्न हो जाती है।

यात्रियों को 19,500 फीट तक की ऊंचाई वाले क्षेत्र से पर्वतारोहण (ट्रैकिंग) करना पड़ता है। ऐसे स्थानों पर ऑक्सीजन कम होता है। वातावरण में हवा का दबाव कम रहता है। इसके लोग हाइपोक्सिया (हवा में ऑक्सीजन की कमी) से प्रभावित होते है। बहुत ही कम लोग पलमोनरी एडमोनरी एडेमा/सेरेब्रल एडेमा तथा अत्यधिक माउंटेन सिकनेस इत्यादि की बीमारी से ग्रसित हो जाते हैं। जिन्हें पहले से ही कोरोनरी आर्टरी, फेफड़ों की विभिन्न बीमारी, उच्च रक्तचाप तथा डायबिटीज की बीमारी है, वे बेहोश हो सकते हैं। जीवन के लिए यह हानिकारक हो सकता है। इसलिए अत्यधिक ऊंचाई वाले स्थानों की यात्रा करने से पूर्व यात्रियों की पूर्ण जांच की जाती है।

लिपुलेख मार्ग पर गुंजी में (3,220 मीटर की ऊंचाई) और नाथुला मार्ग पर शेराथांग (4115 मीटर की ऊंचाई) में चिकित्सा जांच करानी होती है, ताकि ऊंचाई पर शरीर की प्रतिक्रिया का आकलन किया जा सके। यहां स्वस्थ पाए गए यात्रियों को ही आगे की यात्रा करने की अनुमति दी जाती है।

झारखण्ड सरकार ने की सहायता की घोषणा

झारखण्ड सरकार ने इस वर्ष अमरनाथ यात्रा पर जाने वाले सभी यात्रियों को आर्थिक सहायता देने की घोषणा की। मुख्यमंत्री ने सरकार की तरफ से एक–एक लाख रुपये की सहायता देने की घोषणा की। यात्रियों के जत्थे को नगर विकास मंत्री सीपी सिंह ने यहां से विदा किया था। इतना ही नहीं मौसम खराब होने पर मुख्यमंत्री रघुवर दास ने स्वयं उनकी चिंता की। मानसरोवर यात्रा पर गए तीर्थ यात्रियों के खराब मौसम में फंसने पर उन्होंने चिंता जताई थी। सीएम ने अधिकारियों को निर्देश दिया था कि वे विदेश मंत्रालय से संपर्क कर झारखण्ड से गए तीर्थ यात्रियों के बारे में जानकारी ले। अगर झारखण्ड का कोई तीर्थ यात्री फंसा है तो उस तक यथासम्भव मदद पहुंचाएं। मुख्यमंत्री की पहल पर अमरनाथ यात्रा पर गए झारखण्ड के सभी तीर्थ यात्रियों की सकुशल वापसी भी हो गई।

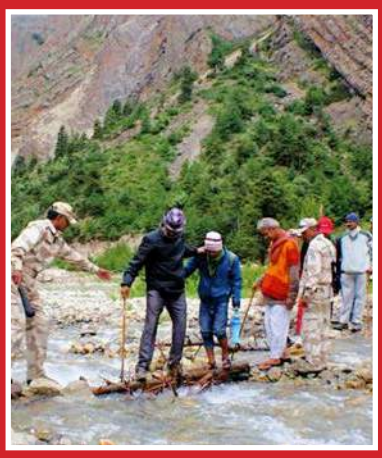

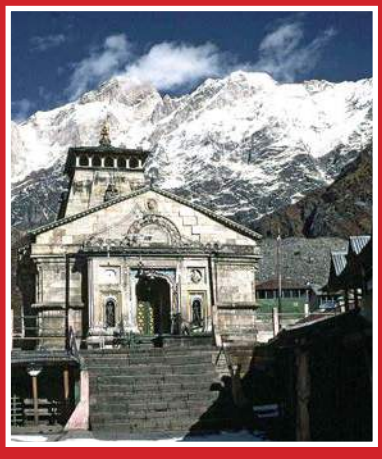

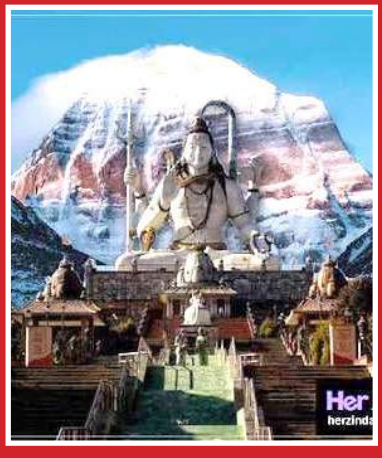

Hotel Tariff of JTDCL April-2018

(Room Tariff Details)

SL.	Room Type	Total Rooms	Price (Applicable Taxes Extra)	Extra Person
1	Hotel Birsa Vihar, Ranchi, M- 7632987037			
	A.C Double Bed	24	1500.00	500.00
	Suite	3	2500.00	500.00
2	Hotel Prabhat Vihar, Netarhat, M- 9102403883			
	A.C Double Bed	15	1300.00	300.00
3	Hotel Van Vihar, Betla, M- 9102403882			
	A.C Double Bed	25	1300.00	300.00
4	Hotel Natraj Vihar, Deoghar, M- 9102403877			
	A.C Double Bed	14	1200.00	300.00
	Non A.C. Double Bed	4	800.00	150.00
	Non A.C. Four Bed	1	1200.00	150.00
	A.C Four Bed	3	1800.00	300.00
	A.C Eight Bed	1	3000.00	300.00
	10 Bed Hall	1	3500.00	300.00
5	Hotel Baidanath Vihar, Deoghar, M- 9102403877			
	Dormitory (2 Bedded)	6	300.00	150.00
	Dormitory (3 Bedded)	2	450.00	150.00
	Dormitory (4 Bedded)	2	600.00	150.00
	Dormitory (5 Bedded)	13	750.00	150.00
6	Hotel Ratan Vihar, Dhanbad,M- 9102403878			
	A.C Double Bed	10	1000.00	200.00
	Non A.C. Double Bed	5	600.00	100.00
	Conference Hall	1	3000.00	0.00

SL.	Room Type	Total Rooms	Price (Applicable Taxes Extra)	Extra Person
7	Tourist Complex, Urwan, M- 9102403880			
	A.C Double Bed	8	800.00	100.00
8	Tourist Complex, Tenughat, M- 9102403879			
	A.C Double Bed	1	900.00	200.00
	Dormitory (4 Bedded)	1	800.00	200.00
	Couple Bed Non A.C.	2	800.00	150.00
	A.C Four Bed	2	1200.00	200.00
9	Tourist Complex, Itkhori, M- 9102403881			
	4 Bedded Room	4	600.00	150.00
	Single Bed Non AC	2	400.00	0.00
	Conference Hall	1	1200.00	0.00
10	Hotel Basuki Vihar, Basukinath, M- 9102403876			
	A.C Double Bed	6	700.00	200.00
	Non A.C. Double Bed	5	500.00	100.00
11	Tourist Complex, Trikut, M- 7091591308			
	A.C Double Bed	2	900.00	100.00
	Non A.C. Double Bed	3	500.00	50.00
	Conference Hall	1	1000.00	0.00
12	Wayside Amenity , Madhupur, M- 7091591307			
	Non A.C. Double Bed	3	550.00	100.00
	A.C Double Bed	2	750.00	100.00
13	Hotel Aranya Vihar, Hazaribag, M- 9470959469			
	Non A.C. Double Bed	8	600.00	100.00

रुगड़ा की सब्जी के साथ मड़ुआ की रोटी

पारंपरिक जनजातीय व्यंजन प्राकृतिक रूप से जैविक होते हैं। वनों से प्राप्त होने वाले खाद्य पदार्थ जैविक होने के साथ–साथ पौष्टिक और सेहतमंद भी हैं। जब हम जीवन की बात करते हैं तो सेहत और स्वच्छता हमारा केंद्र बिंदु होता है। हमारे शरीर को सेहतमंद रखने के लिए पौष्टिक और रासायनिक मुक्त खाने की आवश्यकता है। वह हमें कुछ हद तक जंगलों से प्राप्त होता है।

झारखण्ड के जंगल हमें अनेक प्रकार के जैविक और पौष्टिक व्यंजन प्रदान करते हैं। यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है कि झारखण्ड के जंगलों में मौसम के अनुरूप प्राकृतिक तौर पर खाद्य पदार्थ भी उपलब्ध होते हैं, जो पौष्टिक होने के साथ–साथ स्वास्थ्यवर्धक और स्वच्छ भी हैं। यह सावन का महीना है। ऐसे में जाहिर है कि इस महीने में जैविक और पौष्टिक खाद्य पदार्थ आपकी थाली में होने चाहिए। इसमें एक है रुगड़ा (पुटू) की सब्जी के साथ मड़ुआ की रोटी।

रुगड़ा (पुटू) : यह एक प्रकार का मशरूम है, जो झारखण्ड के जंगलों में बहुतायत में पाये जाते हैं। बरसात के मौसम में खासकर सखुआ (साल) के पेड़ के नीचे मिट्टी के अंदर होते हैं। स्थानीय लोग इसे रुगड़ा के नाम से जानते हैं। वर्तमान में बाजारों में भी बहुतायत में ये उपलब्ध हैं। इसमें अधिक मात्र में कैल्शियम और आयरन पाये जाते हैं। मौसमी होने के साथ–साथ रोग निरोधक क्षमता की दृष्टि से भी ये खाद्य लाभकारी है।

मड़ुआ (रागी) : मड़ुआ मुख्य रूप से ग्रामीणों के खाद्य पदार्थ के रूप में उपयोग में आते हैं। हालांकि इस खाद्य में बहुतायत में उर्जा, कैल्शियम, आयरन पाये जाते हैं। मधुमेह के रोगियों के लिए तो ये रामबाण है। इसके लगातार सेवन से शरीर में शुगर और कोलेस्ट्रोल की मात्र सामान्य रहती है।

रुगड़ा की सब्जी बनाने की सामग्री :

½ किलोग्राम रुगड़ा 3–4 बार अच्छे से धुले हो
50 ग्राम खाद्य तेल
2 बड़े बारीक कटा हुआ प्याज
एक चम्मच लहसुन, अदरख का पेस्ट
½ चम्मच लाल मिर्च पाउडर
½ चम्मच हरी मिर्च का पेस्ट
½ चम्मच जीरा और धनिया पेस्ट और थोड़ा गोलकी पाउडर
आधा छोटा चम्मच हल्दी और गरम मसाला पाउडर
एक बारीक कटा हुआ टमाटर और नमक स्वाद के अनुसार

विधि :

पकने का समय : 30 मिनट

पहले से धुले हुए रुगड़े को चाकू की मदद से साफ कर लें। फिर उसमें एक चम्मच हल्दी पाउडर और नमक डालकर 15 मिनट के लिए पानी में भिगो कर रख दे। इससे उसमें मौजूद बैक्टीरिया या फंगस अच्छे से साफ हो जाएंगे। अब एक कड़ाही में तेल डालकर गरम होने के बाद कटा हुआ प्याज सुनहरा भूरा होने तक फ्राई करें। इसके बाद लहसुन, अदरख और हरी मिर्च पेस्ट को तब तक भूने, जब तक की मसाला तेल नहीं छोड़ दे। अब स्वाद के अनुसार नमक डालकर धोए हुए रुगड़े को डाल दे। फिर धीमी आंच में ढककर धीरे–धीरे पकने दे। बीच में इसे चलाते भी जाये। दस मिनट के बाद लगे कि रुगड़ा थोडा फ्राई हो गया है तो उसमें जीरा, धनिया, गोलकी और गरम मसाला पाउडर डालकर 5 मिनट तक अच्छे से चलाकर भूने। फिर एक कप गुनगुना पानी डालकर साथ में कटा हुआ टमाटर भी डालें और ढककर धीमी आंच में 10 मिनट तक पकाएं।

मडुआ (रागी) की रोटी की सामग्री :

250 ग्राम मडुआ आटा
एक चम्मच बटर (मक्खन)
नमक स्वाद के अनुसार

आटा गूंथने की प्रक्रिया (इसे मडुआ होंडा भी कहते हैं)

एक बर्तन (अल्युमीनियम) में डेढ़ कप पानी डालकर चूल्हे में गर्म करें। जब वह खौलने की प्रक्रिया में आ जाए, तब उसमें मडुआ आटा डालकर अच्छे से मिलाते जाए। जब लगे कि मडुआ अच्छी तरह से मिल गया, तब चूल्हा बुझा दे। उसमें बटर डालकर हाथों से गरम–गरम मडुआ को गूंथना शुरू करें। जितना उसे हाथों से गूंथेंगे मडुआ का लोई उतना ही नरम होगा। फिर तुरंत उसकी रोटी बनाकर रुगड़ा की सब्जी के साथ परोसे।

लेखक अरूणा तिर्की झारखंड के स्वदेशी भोजन को नई पहचान दिलाने के मिशन में हैं। उनका संगठन अजम एमबा स्वदेशी भोजन को बढ़ावा देता है। वह भी स्वदेशी संस्कृति, भोजन और भोजन के संरक्षण के लिए काम कर रहा है। उसके प्रयासों से स्वदेशी संस्कृति पुनर्जीवित हो रही है। उसे मजबूती मिल रही है। एक स्वस्थ जीवन के लिए स्वदेशी व्यंजनों को लोकप्रिय बनाने के साथ उसका संरक्षण भी कर रही है। वह जेवियर इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल सर्विस (एक्सआईएसएस) रांची की छात्रा रही है।

सोशल मीडिया में झारखण्ड पर्यटन

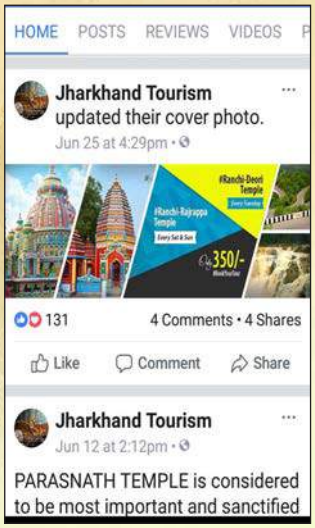

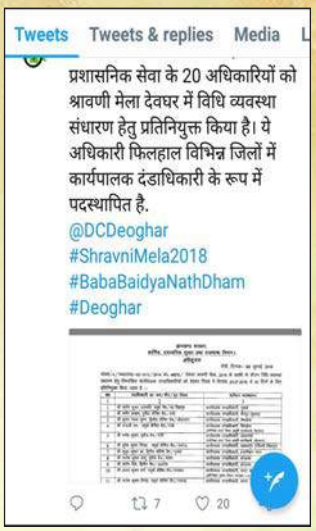

Jharkhand Tourism
581 Tweets
Tweets
Tweets & replies
Media
Jharkhand Tourism Retweeted
Raghubar Das @das... · 5d
देवघर में पावन श्रावणी मेले की तैयारियों को लेकर बाबा बैद्यनाथ धाम बासुकीनाथ तीर्थ क्षेत्र विकास प्राधिकरण की बैठक की।श्रावणी मेला पूरी दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है,यहां श्रद्धालुओं को विश्वस्तरीय सुविधाएं दी जाएंगी।
पूरी हो शिवभक्तों की मनोकामना, यही है भोलेनाथ से प्रार्थना
0:00 769 views
40
195
613

Jharkhand Tourism
581 Tweets
Tweets
Tweets & replies
Media
Jharkhand Tourism @... · 1d
Kawariyas and Devotees at Deoghar
More than 10 million devotees form a queue of saffron dyed clothing they walk for almost 108 kilometers from Sultangunj to Deoghar Baba Baidyanath Temple.
#dasraghubar #PMModi #IncredibleIndia #culture
Shravani Mela - 2018

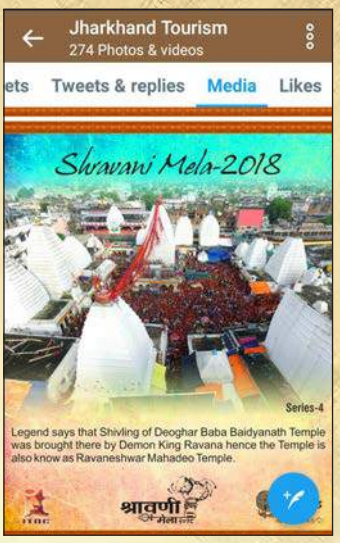
Jharkhand Tourism
274 Photos & videos
Tweets & replies
Media
Likes
Shravani Mela-2018
Series-4
Legend says that Shivling of Deoghar Baba Baidyanath Temple was brought there by Demon King Ravana hence the Temple is also know as Ravaneshwar Mahadeo Temple.

Jharkhand Tourism
274 Photos & videos
Tweets & replies
Media
Likes
भक्ति की शक्ति हुई उज़ागर,
उमड़ रहा श्रद्धा का सागर।
श्रावणी मेला २०१८
Shravani Mela - 2018

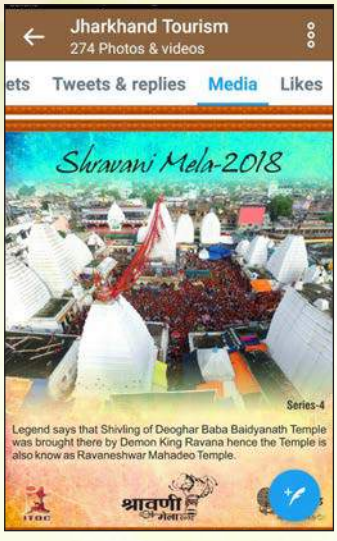
Jharkhand Tourism
274 Photos & videos
Tweets & replies
Media
Likes
Shravani Mela-2018
Series-4
Legend says that Shivling of Deoghar Baba Baidyanath Temple was brought there by Demon King Ravana hence the Temple is also know as Ravaneshwar Mahadeo Temple.
श्रावणी मेला २०१८

Search
HOME
POSTS
REVIEWS
VIDEOS
Jharkhand Tourism shared a video.
Jul 13 at 11:54am
Shravani Mela 2018
Jul 12 at 6:03pm
श्रावणी मेला २०१८
119 views
20
1 Comment • 3 Shares

Search
HOME
POSTS
REVIEWS
VIDEOS
Shravani Mela 2018
Jul 7 at 5:36pm
Shri. Manish Ranjan (IAS) Secretary Tourism, Govt. of Jharkhand and Shri Sanjiv Kumar Besra (IAS) M.D. JTDC along with other officials and Event team Alica discussing plans for Shravani Mela 2018
See Translation

Jharkhand Tourism
581 Tweets
Tweets
Tweets & replies
Media
Jharkhand Tourism @... · 5d
Shri Raghubar Das Hon'ble Chief Minister, Jharkhand and Shri Amar Kumar Bauri Hon'ble Minister, Tourism, Art Culture, Sports & Youth Affairs, Jharkhand along with other officials Discussing plans for Shravani Mela 2018
@dasraghubar #IncredibleIndia
4
19

Jharkhand Tourism
584 Tweets
Tweets
Tweets & replies
Media
Jharkhand Tourism ... · 18h
On the auspicious occasion of shravani mela 2018 Jharkhand Tourism welcomes you to Deoghar Baba Baidyanath Dham.
@dasraghubar
@ajaynathjhaprd
#VisitDeoghar #deoghar
#CleanDeogharGreenDeoghar
#NaredraModiJindabad
#incredible #PMOIndia #India
#Indian
श्रावणी मेला

HOME
POSTS
PHOTOS
ABOUT
Jharkhand Tourism added 2 new photos.
Sep 23, 2014 at 12:32pm
Natural beauty of Gumla district in palkot village. Shared kindly by Mr. Ravi mishra Palkot
See Translation

Jharkhand Tourism
581 Tweets
Tweets
Tweets & replies
Media
Jharkhand Tourism @... · 4d
Shri Sanjiv Kumar Besra (IAS) M.D. JTDC and Event Team Alica Purple discussing plans for Shravani Mela 2018
#PMOIndia #dasraghubar
#IncredibleIndia #culture
2
9
Jharkhand Tourism @...
Shri Raghubar Das Hon'ble

Search
HOME
POSTS
REVIEWS
VIDEOS
Shravani Mela 2018
Jul 12 at 3:52pm
Shri Raghubar Das Hon'ble Chief Minister, Jharkhand and Shri Amar Kumar Bauri Hon'ble Minister, Tourism, Art Culture, Sports & Youth Affairs, Jharkhand along with other officials Discussing plans for Shravani Mela 2018
See Translation

jharkhand tourism
Nature's hidden jewel

DISCOVER JHARKHAND

An Eco Tourism Destination

Return to the lap of nature, to be one with the calmness and peace that surrounds the many deep, lush forests of Jharkhand. You should never miss the opportunity to spend some time enjoying the silence of these jungles and dams of the state of Jharkhand

विज्ञापन

229_(07-18) Annapurna Press 0651-2331800
e-mail : appranchi.1969@gmail.com

Form its gushing waterfalls like the Jonha in the Ranchi district, to the beautiful Jain temples of Parasnath Hills, Maluti Temple Town is a unique heritage village in Dumka district. Then there's the Jame Masjid, an excellent piece of Mughal art and architecture. Come, see the elephants and tigers at Betla National Park. Jharkhand is the land of Plenty. Discover Jharkhand, India's best kept secret, where beauty meets faith.

GOVERNMENT OF JHARKHAND
Department of Tourism, F.F.P. Building, 2nd Floor, Dhurwa, Ranchi 834004
Secretary Ph.: 0651-2400493, Fax : 2400492, Email : dirjharkhandtourism@gmail.com
Website : www.jharkhandtourism.gov.in
www.facebook.com/jharkhandtourismdepartment | www.twitter.com/visitjharkhand
www.youtube.com/channel/UCKDHUzseKwkESQLzOliVOA

मुल्य ₹30/-